प्रारंभिक संबोधन

सत्र - 181

4 दिसम्बर, 2015

माननीय नेता, सत्तारूढ़ दल

माननीय नेता, विरोधी दल

मंत्रिपरिषद् के माननीय सदस्यगण

बिहार विधान परिषद् के माननीय सदस्यगण

बिहार विधान परिषद् का 181वां सत्र आज से आरंभ हो रहा है। इस अवसर पर मैं माननीय मुख्यमंत्री, माननीय उप मुख्यमंत्री, माननीय संसदीय कार्य मंत्री एवं मंत्रिपरिषद् के माननीय सदस्यों का हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन करता हूं। बिहार विधान परिषद् के माननीय नेता, विरोधी दल, विभिन्न दलों के माननीय नेतागण, माननीय सचेतकगण तथा माननीय सदस्यगण का हार्दिक स्वागत करता हूं, साथ ही, लोकतंत्र के प्रहरी प्रिंट एवं इलेक्ट्रोनिक मीडिया के पत्रकार-छायाकार प्रतिनिधियों का भी स्वागत करता हूं।

हमारे देश में लोकतंत्र की जड़ें इतनी मजबूत एवं सुदृढ़ हैं कि विश्व में इसकी अलग पहचान है। हमारा प्रदेश बिहार गणराज्य की जननी रहा है।

पिछले दिनों बिहार में सम्पन्न विधान सभा चुनाव में जनता द्वारा दिए गए प्रचंड जनादेश का हम सभी सम्मान करते हैं। प्रदेश में नई सरकार का गठन हुआ है और माननीय श्री नीतीश कुमार जी पांचवीं बार बिहार के मुख्यमंत्री के पद पर आसीन हुए हैं। इस अवसर पर मैं माननीय श्री नीतीश कुमार जी एवं उनके मंत्रिमंडल के सभी माननीय सदस्यों को हार्दिक बधाई देता हूं। मुझे इस बात की अत्यंत प्रसन्नता है कि माननीय मुख्यमंत्री इस

अवधेश नारायण सिंह

सभापति

बिहार विधान परिषद्

सदन के सदस्य भी हैं। साथ ही मंत्रिमंडल में बिहार विधान परिषद् का प्रतिनिधित्व कर रहे तीनों माननीय सदस्यों को भी मैं विशेष रूप से बधाई देता हूं।

आशा है कि नई सरकार जनता-जनार्दन की उम्मीदों एवं आकांक्षाओं पर खरी उतरेगी एवं प्रदेश के चहुंमुखी विकास के नए आयाम रचेगी।

सदन के माननीय सदस्यगण एवं सरकार के सभी उत्तरदायी प्रतिनिधिगण, राज्य की जनता की यथासंभव अधिकाधिक समस्याओं पर पूर्व की भांति इस बार भी समाधान की राह सदन के माध्यम से तलाशते रहेंगे।

मैं अपनी ओर से भी इस बात का भरोसा देता हूं कि हम यथासंभव आम लोगों की समस्याओं के प्रति सजग रहेंगे और निदान की दिशा में दलगत भावना से ऊपर उठकर कार्य करते रहेंगे।

पिछले सत्रों की तरह इस सत्र में भी माननीय सदस्यगण, परिषद् सचिवालय के पदाधिकारी-कर्मचारीगण तथा मीडिया के प्रतिनिधियों से सक्रिय सहयोग की अपेक्षा रखता हूं।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं एक बार फिर आप सभी का स्वागत करता हूं।

धन्यवाद ।

अवधेश नारायण सिंह

4 दिसम्बर, 2015